गुरु नानक देव : जीवन दर्शन

डॉ0 विधि शर्मा,

एसोसिएट प्रोफेसर,
अदिति महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

यूरोप में जब पुनर्जागरण काल की शुरुआत होती है, ठीक उसी समय भारत में धार्मिक सुधार का एक बड़ा आंदोलन जन्म लेता है। जिसे 'भक्तिकाल' कहा गया। सच्चे अर्थों में इसे धार्मिक 'रेनासाँ' कहा जाए तो गलत नहीं होगा। उत्तर भारत में कबीर तथा रामानंद, महाराष्ट्र में नामदेव तथा एकनाथ जैसे सुधारकों ने ईश्वरीय एकता, धार्मिक एवं सामाजिक सद्भाव की अगुवाई की।

गुरु नानक देव का जन्म 15 अप्रैल,1469 को हुआ। यह दौर यूरोप एवं भारत दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण था। गुरुनानक देव के समकालीनों में वल्लभाचार्य (1449), चैतन्य महाप्रभु (1486–1533), मीराबाई (1449), तुलसीदास (1532) जैसे महान सुधारक थे। गुरुनानक देव ने अपने जीवन में लोदी वंश–(बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी, इब्राहीम लोदी) तथा मुगल शासकों बाबर एवं हुमायूँ की राजनीतिक विरासत को देखा। कई मुस्लिम शासकों के हिंदू विरोधी रवैये ने हिदू–मुसलमानों के बीच खाई पैदा कर दी।

गुरु नानक के आगमन के समय हिंदू एवं मुस्लिम धर्म दोनों अवनति की ओर बढ़ रहे थे। जाति–व्यवस्था कठोर हो चली थी। आत्म की अपेक्षा बाह्य आचरण पर अधिक बल दिया जाने लगा। हिंदू एवं इस्लाम दोनों धर्मों की यही हालत थी। 'रामकली दी वार' में गुरु नानक ने इन स्थितियों पर कटाक्ष किया है –

हिंदू के घर हिंदू आवै, सूत जनेऊ पड़ि गलि पावै।

सुतु पाइ करे बुरिआई, नता धोता थाइ न पाई।।

मुसलमानू करे बड़िआई, विणु गुरु पीरै को थाई न पाई।।[1]

गुरु नानक देव के जीवन दर्शन का सबसे बड़ा आधार उनका वह मूलमंत्र था –

जिसे उन्होंने सुल्तानपुर के पास बहने वाली काली बहने वाली नदी के पास वाली गुफा में समाधिस्थ रहने तथा ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् बोला था। वह मूल सूत्र था – 'न कोई हिंदू है और न कोई मुसलमान।' जिसका अर्थ था कि सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं जो सार्वभौम बंधुत्व की भावना से जुड़े हुए हैं। उनका मानना था कि भारत के दो प्रमुख धर्म –हिंदू–मुसलमान दोनों अपने धर्म–सिद्धांतों की अवहेलना कर रहे हैं, अपने मूल धर्म–विचार से जुड़े नहीं हैं। जिसका अर्थ था कि वे न हिंदू होंगे, न मुसलमान। तब आया 'सिक्ख धर्म' जिसका आधार था – नाम स्मरण तथा भजन, दान, स्नान, सेवा (ईश्वर तथा मानव सेवा) तथा स्मरण जिसमें आत्मा की शुद्धि एवं परमात्मा मिलन की इच्छा।

गुरु नानक देव के जीवन दर्शन का एक और आधार है – समानता। उनकी एक प्रसिद्ध उक्ति है – ' नानक उत्तम, नीच न कोई।' इन पंक्तियों से आप गुरु नानक देव के पूरे जीवन–दर्शन का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र लिखते हैं – ''नानक धर्म जीवनगत आचरण अथवा व्यवहार पर आधारित

विश्वव्यापी आध्यात्मिक चेतना है जो अपने अनुयायियों को ही नहीं, अन्यों को भी शताब्दियों से विचार सूत्र में सँजोए रखने में सक्षम रहा है।''[2] आध्यात्मिक चेतना तथा जीवनगत आचरण का संतुलन ही गुरु नानक देव के जीवनदर्शन का आधार है। आध्यात्मिक स्तर पर गुरु नानक देव के सैद्धांतिक या भक्ति संबंधी विचार आते हैं। जिनमें परमात्मा, माया, मनुष्य (जीव और आत्मा), मन, मनमुख, मरजीवा, गुरुमुख, सद्गुरु [3] आदि का विवेचन किया जाता है। परमात्मा संबंधी विचार में गुरु नानक देव ने ब्रह्म के तीनों रूपों – सगुण, निर्गुण तथा उभय विधि अर्थात् सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों की उपासना सम्मिलित है। गुरु नानक देव ने अनुभूति एवं श्रद्धा के बल पर परमात्मा के स्वरूप की इस प्रकार व्याख्या की है–

'ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मुरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।'[4]

इस सूत्र के आधार पर ईश्वर ही सत्य है, नाम है और समस्त शक्तियों का स्वामी है।

गुरु नानक देव ने ब्रह्म के निर्गुण रूप का प्रतिपादन 'गुरुग्रंथ साहिब' में बड़े ही मौलिक ढंग से किया है–

अरबद नरबद धुँधूकारा।....

बेद कतेब न सिंमृत सासत। पाठ पुराण उदै नहीं आसत।[5]

गुरु नानक देव ब्रह्म के निर्गुण स्वरूप का वर्णन निषेधात्मक तथा सगुण ब्रह्म का प्रतिपादन विधि शैली में करते हैं। निर्गुण ब्रह्म में जल, थल, धरती और आकाश कुछ भी सम्मिलित नहीं है।[6]

परमात्मा के सगुण रूप का वर्णन भी गुरुवाणी में मिलता है। ब्रह्म का यह रूप अवतारवादी नहीं है। वह तो परमात्मा की विराट चेतना एवं अनंत गुणों से संपन्न विराट स्वरूप है। [7]

ब्रह्म का उभय रूप अर्थात् सगुण–निर्गुण दोनों के संदर्भ में गुरु नानक की स्पष्ट समझ थी कि अव्यक्त निर्गुण परमात्मा से सगुण की सृष्टि हुई है। वे 'रामकली' में कहते हैं –

अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुण थीआ।[8]

गुरु नानक का दर्शन एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा एवं अवतारवाद का खंडन करता है। गुरु नानक देव ने उस एक ईश्वर के प्रति अखंड प्रतिबद्धा दिखाई है। जैसा कि वे कहते हैं –

साहिबु मेरा एकु है, अवरू नहीं भाई।

या

साहिबु मेरा एको है। एको है भाई एको है।[9]

गुरु नानक देव ने शंकर की भाँति 'माया' को प्रकृति रूप माना परंतु वे माया या प्रकृति को परमात्मा से स्वतंत्र नहीं मानते। वे मानते हैं कि परमात्मा ने ही माया का सृजन किया है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वह परमात्मा के 'आदेश' से संचालित होती है। 'सारंग दी वार' में वे कहते हैं –

आपै आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ।

आपै खेलु रचइओनु सभु जगतु सवाइया।[10]

नानक देव ने 'मन' एवं उसके स्वरूप पर भी चर्चा की है। मन उनके जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। नानक–वाणी में 'मन' की उत्पत्ति –क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर इन पाँचों तत्वों का योग मानते हैं। मन अहंकार विकार युक्त तथा प्रकाश युक्त होना चाहिए, तभी परमात्मा से मिलन संभव हो सकता है। अहंकारी मन विषयों की ओर दौड़ता है। नानक देव ने 'हुक्म' तथा 'हउमै' (अहंकार) को एक मानते हैं। उनका कहना है कि ज्यों ही 'हुक्म' की उत्पत्ति होती है, त्यों ही हउमै (अहंकार) की उत्पत्ति होती है। नानक देव 'हउमै' (अहंकार) को जगत की उत्पत्ति का कारण मानते हैं –

हउमै विचि जगु उपजै[11]

ऐसा मन वनरूपी संसार में मनुष्य को भटका सकता है परंतु यही मन जब सहज अवस्था में पहुँचता है, तब वह मणिमुक्ता के समान अमरत्व को प्राप्त हो जाता है –

मन महि माणहु लाल नामु रतनु पदारथु हीरू।[12]

गुरु नानक देव ने जीवात्मा, मनुष्य एवं आत्मा के पारलौकिक संबंध को व्याख्यायित किया। गुरु नानक के अनुसार जीव–सृष्टि परमात्मा के 'हुकुम' (आदेश) से हुई है। मनुष्य का जीवन, उसका यश उसी परमात्मा की देन है। नानक के अनुसार जीव परमात्मा से पैदा होता है इसलिए उसे 'जीव–आत्मा' कहा जाता है। इस अर्थ में जीव अविनाशी (ईश्वर की भाँति) या अमर हो जाता है। नानक देव कहते हैं –

न जीउ मरै न डूबे तरै।[13]

नानक मनुष्य देह की सबसे बड़ी उपलब्धि परमात्मा मिलन में देखते हैं। नानक देव ने मनुष्य जीवन की छह अवस्थाओं का वर्णन किया है –

1. गर्भावस्था 2. बाल्यावस्था 3. यौवनावस्था 4. प्रौढ़ावस्था 5. वृद्धावस्था 6. मरणावस्था

वे जीवन की निरर्थकता तथा सार्थकता इन्हीं छह अवस्थाओं में मानते हैं।

नानकदेव के जीवन दर्शन का एक और प्रमुख आधार है – उनकी भक्तिभावना एवं सामाजिक चेतना। डॉ0 विजयेंद्र स्नातक ने नानक देव की भक्ति भावना के संदर्भ में कहा – ''उन्होंने (नानकदेव) पोथी–पत्रे के शास्त्रीय ज्ञान को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया। संकीर्ण बंधनों की परिधि से छिटक कर वे विशाल संसार के उन्मुक्त प्रांगण में आ खड़े हुए और चारों दिशाओं में उन्हें जो कुछ सत्य और यथार्थ लगा उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के ग्रहण करते गए।''[14] वे आगे लिखते हैं –''आस्तिक बुद्धि से उन्होंने ईश्वर की खोज की और समस्त चराचर जगत में व्याप्त, त्रिकालातीत, अयोनि, स्वयंभू, करता, आदि पुरुष को आराध्य देव के रूप में प्रतिष्ठित किया।''[15] गुरु नानक देव ने निराकार–निरंजन पुरुष की अद्वैत भक्ति पर अधिक ज़ोर दिया है। भक्ति के दो रूपों – वैधी तथा प्रेमा भक्ति में गुरु नानक देव ने वैधी भक्ति को अपनी भक्ति में स्थान नहीं दिया अपितु उसका विरोध भी किया है। 'वैधी भक्ति' जिसे नवधा भक्ति भी कहते हैं – को गुरु नानक ने 'पाखंडि भगति[16] कहा है। इसके विपरीत वे 'प्रेमा भक्ति' को महत्तव देते हैं। जिसमें 'महाराग' की प्रधानता होती है। प्रेमाभक्ति में अहं विगलित हो जाता है और रागानुराग भक्ति–भावना प्रबल हो उठती है।

नानक देव की भक्ति में गुरु एवं ज्ञान दोनों को विशेष महत्त्व प्राप्त हैं। नानक मानते हैं कि निवृत्तिपूर्वक प्रवृत्ति–मार्ग पर बढ़ने के लिए गुरु–कृपा का विशेष महत्त्व है क्योंकि 'गुरु कृपा' से ही दुष्प्रवृत्तियों का निवारण होता है। गुरु नानक का विश्वास है कि इस कारण निर्मल चेतना, अहंकार(हउमै) का विनाश कर देती है। उन्होंने कहा –

गुरु परसादी दुरमति खोई। जह देखा तह एको सोई।।

कहत नानक ऐसी मति आवै। तां को सचे सचि समावै।।[17]

नानक देव ब्रह्म ज्ञान अद्वैत विचार का परिणाम नहीं अपितु गुरु ज्ञान से सहज प्राप्त है। वे मानते हैं कि गुरु से ही ज्ञान का प्रसाद मिलता है। उसी ज्ञान से आत्मा राम (ब्रह्म) मय हो जाती है।

गुरु नानक देव की भक्ति भावना गृहस्थ विरोधी नहीं है। वे गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार में रहते हुए भी अनासक्ति का भाव ही उनकी भक्ति की विशेषता है।

गुरुनानक देव के जीवन दर्शन में उनका समाज –चिंतन भी शामिल है। 'गुरुवाणी' में

सामंतवाद विरोध स्पष्टता से मुखर हुआ है। नानक अपनी वाणी से मानव – विरोधी रूढ़ियों पर करारी चोट करते हैं। वे जाति–पाँति, ऊँच–नीच, आडंबरी समाज को मनुष्य विरोधी मानते हैं। वे अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार करते हैं। वे सभी बंधनों को तोड़कर मानव की एक ही जाति का प्रयत्न करते हैं। यह समाज जाति–बंधन से मुक्त होना चाहिए। वे कहते हैं –

जाणहु जोति न पूछहू जाति अगै जाति न हे।[18]

वे सच्चे ब्राह्मण की परिभाषा कुछ इस ढंग से देते हैं –

सो ब्राह्मण जो ब्रह्म विचारै।

आपि तरै सगलै कुल तारै।।[19]

श्रमिक वर्ग के शोषण के शब्द चित्र नानक–वाणी में जगह–जगह मिलते हैं। नानक तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं से भी प्रेरित थे जिनका उल्लेख उनकी रचनाओं में मिलता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुरु नानक देव का जीवन –दर्शन लोकपरक, कवि मनीषी तथा समाज मनीषी के रूप में अधिक दिखता है। वे समन्वयकारी पुरुष थे जिनमें ज्ञानाश्रयी धारा, हठयोगी परंपरा, सूफी प्रेमाश्रयी धारा तथा इस्लाम की एकेश्वरवादी विचारधारा का अद्भुत समन्वय मिलता है। गुरु नानक साहित्य आधुनिक समाज की नींव है।

---

[1] गुरु नानक और उनका काव्य – सं0 डॉ0 महीप सिंह, डॉ0 नरेंद्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0–1971, पृ0–6

[2] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–11

[3] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–11

[4] गुरु नानक देव, डॉ0 जयराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं0 –1983, पृ0266

[5] गुरु नानक देव, डॉ0 जयराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं0 –1983, पृ0267

[6] जल थलु धरनि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार।
न तदि माइआ मगनु न छाइआ न सूरज चंद न जोति अपार।।(गुरु ग्रंथ साहिब –गूजरी, अष्टपदी–2)

[7] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–18

[8] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–20

[9] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–20

[10] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–26

[11] गुरु नानक देव, डॉ0 जयराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं0 –1983, पृ0271

[12] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–30

[13] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–31

[14] गुरु नानक और उनका काव्य – सं0 डॉ0 महीप सिंह, डॉ0 नरेंद्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0–1971, पृ0–164

[15] गुरु नानक और उनका काव्य – सं0 डॉ0 महीप सिंह, डॉ0 नरेंद्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0–1971, पृ0–164

[16] पाखंडि भगति न होवई पारब्रह्म न पाइआ जाइ। बिलावलु सार, पृ0–849

[17] सप्तसिंधु नानक–वाणी, डॉ0 रमेशचंद्र मिश्र, हिदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0–41

[18] गुरु नानक और उनका काव्य – सं0 डॉ0 महीप सिंह, डॉ0 नरेंद्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0–1971, पृ0–83

[19] गुरु नानक और उनका काव्य – सं0 डॉ0 महीप सिंह, डॉ0 नरेंद्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0–1971, पृ0–84